ऋत्विक सान्याल

अकादेमी पुरस्कार : हिन्दुस्तानी गायन

श्री ऋत्विक सान्याल का जन्म 12 अप्रैल 1953 को बिहार के कटिहार में हुआ था। श्री सान्याल ने संगीत की शुरूआत अपनी माताजी रानू सान्याल से की थी जिन्होंने उन्हें बंगाल के लोक तथा मशहूर संगीत सिखाए थे। आप जिया मोहीयुद्दीन डागर और जिया फरीदुद्दीन डागर (1963–75) से ध्रुपद संगीत का प्रशिक्षण लेने के लिए मुम्बई गए थे, और मुम्बई विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र में एम.ए. किया था। तब संगीत में अध्ययनों को जारी रखने, संगीत–विज्ञान में पी.एचडी करने के लिए बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में गायन संगीत में मास्टर डिग्री प्राप्त करने के लिए वाराणसी चले गए थे। आप 1981 से बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में पढ़ाते रहे हैं, जहां आप इस समय गायन संगीत के प्रोफेसर हैं।

श्री ऋत्विक सान्याल ध्रुपद के एक प्रतिष्ठित कलाकार हैं जिन्होंने अपने संगीत, तथा विद्वतापूर्ण कार्य से देश एवं विदेश में कला का प्रचार–प्रसार किया है। आपने जालंधर में हरबल्लभ समारोह, ग्वालियर में तानसेन समारोह, आईटीसी संगीत समारोह जैसे महत्वपूर्ण उत्सवों और विभिन्न ध्रुपद मेलों में सैंकड़ों प्रस्तुति पेश की हैं। आपने भारत के कुछ विश्वविद्यालयों, पश्चिमी यूरोप, अमेरिका, जापान, और आस्ट्रेलिया में सेमिनार तथा कार्यशालाओं का आयोजन किया है। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के आपके विद्यार्थी विश्वभर में फैले हुए हैं। देश एवं विदेश के हाऊसों द्वारा कई रिकॉर्डिंग्स बाज़ार में निकाले हैं, दो प्रमुख प्रकाशन *संगीत का दर्शनशास्त्र* (1987) और *ध्रुपदः भारतीय संगीत में परंपरा और प्रस्तुति* (2004), और कई प्रकाशित लेख हैं।

श्री सान्याल को उनके कार्य के लिए उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार (2002), और ध्रुपद सम्मान (2007) से सम्मानित किया गया है।

श्री ऋत्विक सान्याल को हिन्दुस्तानी गायन संगीत में योगदान के लिए संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।